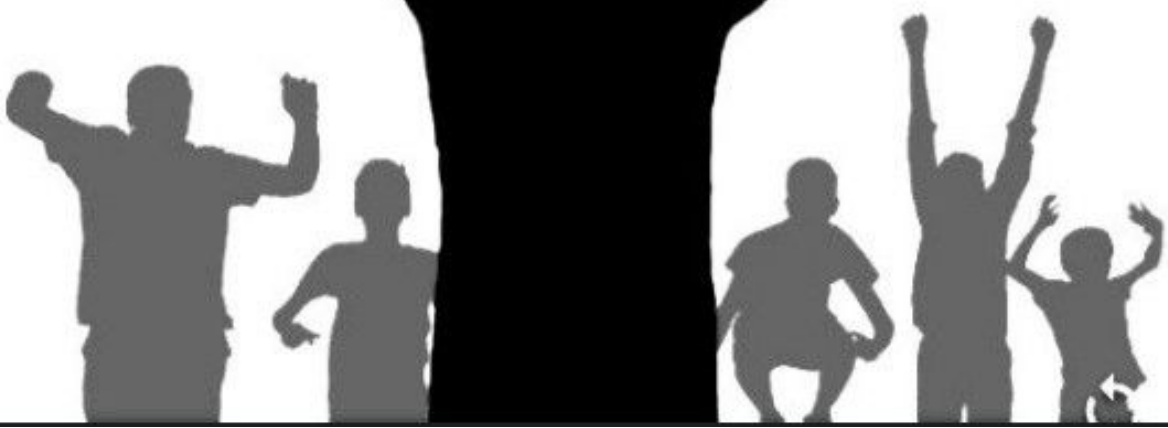


THE
LAMP

शिकायतें

WRITTEN BY RAHUL KUMAR PURI



शिकायतें

लेखक: Rahul Kumar Puri

प्रकाशन तिथि: 06/04/2024

पुनः प्रकाशन तिथि: 18/08/2024

प्रकाशक: The Lamp

सामग्री

- अध्याय 1: पागलपन और आत्महत्या
- अध्याय 2: इससे निपटने के उपाय
- अध्याय 3: माता-पिता के लिए सुझाव

शिकायतें

दुनिया में मेरे कई दोस्त हैं, लेकिन असल जिंदगी में कोई नहीं है। इस तन्हाई ने मुझे अकेले रहना सिखा दिया है। वैसे, मैंने अपना नाम बताना तो भूल ही गया – मेरा नाम शाहिल है। हर सुबह मेरी जिंदगी एक ही जैसी चलती है। आज भी कोई अलग दिन नहीं है। मैं अभी-अभी सोकर उठा हूँ। मेरी पलकें धीरे-धीरे खुल रही हैं और फिर बंद हो जा रही हैं। जैसे ही मेरी आँखें हलकी-हलकी खुलने लगीं, मैंने खुद को सुबह की उस नीली रोशनी में लिपटा पाया। आँखों की नींद अभी पूरी तरह से उतरी नहीं थी, फिर भी मैं उठा और अपना फोन ढूँढने लगा। फोन की तेज़ रोशनी मेरी पलकों पर पड़ते ही मुझे एकदम से जगा देती है। यह मेरी रोज़मर्रा की दिनचर्या का हिस्सा है। फोन उठाते ही सबसे पहले instagram मैसेज चेक करता हूँ और फिर धीरे-धीरे दिन की शुरुआत होती है। 'ये पंकज भी ना, इतनी सुबह कौन फोन करता है यार?' मैंने अपने आप से बड़बड़ाया। फोन पर पंकज की आवाज़ सुनते ही मैं थोड़ा चौंका। 'हाँ, हैलो, क्या? किसका एक्सीडेंट हो गया? ठीक है, चलो!' असल में मैं

सपना देख रहा था। नींद में ही मैंने अपने सपने को सच मान लिया था। फिर मैंने सोचा, यह तो बस एक सपना था। लेकिन यह सपना भी कितना भयानक था। बेचारा लड़का, महज 17 साल का था और चल बसा। उसकी कनपटी से काफी खून निकल रहा था और वहां पर काफी भीड़ जमा हो चुकी थी। मैं उस दृश्य को देखकर बहुत ही मार्मिक महसूस कर रहा था। अंदर ही अंदर गुस्सा भी आ रहा था कि आखिर क्यों चंद पलों की खुशी के लिए लोग वाहनों को इतनी तेज गति से चलाते हैं और अपनी ज़िंदगी को खतरे में डालते हैं। काफी देर तक वहाँ खड़े रहने के बाद मैं और पंकज वहां से जाने लगे।

गाँव में इस तरह की घटनाएँ हमेशा होती रहती थीं। किसी न किसी दुर्घटना की खबरें अक्सर सुनने को मिलती थीं सुबह की रोज़मर्रा की गतिविधियों में व्यस्त होते हुए, मैंने ब्रश किया और फिर खाने बैठ गया। खाने के दौरान मैंने अपने पसंदीदा गायक अरिजीत सिंह के गाने बजाने शुरू कर दिए। उनकी आवाज़ मेरे दिल को सुकून देती थी, लेकिन चाची मुझे ही देख रही थी। मैंने सोचा कि ये गाना सुनकर न जाने मेरे बारे में क्या सोचेंगी, कि मैं बड़े उदास भरे गाने बजा रहा हूँ। इसलिए मैंने आवाज काफी कम कर दिया। आज मौसम काफी अच्छा था। ठंडी-ठंडी हवाएँ चल रही थीं, जो मन को एक अजीब सा सुकून दे

रही थीं। जैसे ही मैं खाना खाकर बाहर आया, आंगन में रघु चाचा आए थे। उनके रेडियो में पुराने गाने बज रहे थे।

"मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिशतानी, सर पे लाल टोपी जामा, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी।"

रघु चाचा जब भी आते, तो हमेशा यही कहते,
"का करे सारी उमरिया बचवा के पढ़ावे में बीत गइल, आज वही बचवा विदेश में रह रहल बा, आ ई बुढ़ बाप के पूछत भी नाहि।"

उनकी बातें सुनकर मुझे हंसी भी आती थी, लेकिन अंदर ही अंदर एक डर की किरण भी जाग जाती थी। क्या मेरे साथ भी ऐसा ही होगा? क्या एक दिन मैं भी अपने माता-पिता से दूर चला जाऊंगा और उनकी परवाह करना भूल जाऊंगा? मैं महज 12 साल का ही था, लेकिन मुझे उस बुढ़े बाप की भावनाओं को समझने की क्षमता थी। उनके चेहरे पर झलकते दुःख को देखकर मुझे अपनी भविष्य की चिंताएँ सताने लगीं। स्कूल जाने का समय हो गया था। मैं जल्दी-जल्दी तैयार होकर जाने लगा। बैग उठाया और स्कूल की तरफ चल पड़ा। श्रेया रास्ते में ही थी। मैंने उसे देखा तो अपनी साइकल की

speed बढ़ा दी ताकि उसके साथ चल सकूँ। हम दोनों बातें करते हुए स्कूल की ओर जाने लगे। श्रेया हमारे क्लास की मॉनिटर थी, लेकिन पढ़ाई में इतनी तेज नहीं थी। उसे बस बातें करना, खेलना और मस्ती करना पसंद था। वो मेरी बहुत अच्छी दोस्त थी और हम अपनी हर बात एक-दूसरे से साझा करते थे। एक दिन, मैंने उससे पूछा कि उसका पसंदीदा रंग क्या है। उसने बिना देर किए कहा, "पिंक (गुलाबी)।" फिर उसने मुझसे पूछा, "तुम्हारा क्या है?" मैंने थोड़ी देर सोचा और फिर कहा, "पिंक।" असल में, मेरा पसंदीदा रंग काला था, लेकिन उस दिन के बाद से मेरा पसंदीदा रंग गुलाबी हो गया। उसने हँसते हुए कहा, "तुमने मेरे रंग की कॉपी की।" मैं भी मुस्कुरा दिया। फिर उसने मुझसे पूछा, "क्या तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड है?" मैंने जवाब दिया, "नहीं, पर हाँ, मेरी गर्लफ्रेंड जैसी तुम दोस्त तो हो।" उसने हँसते हुए कहा, "हट पागल" अचानक स्कूल की घंटी बजी और हम दोनों अंदर जाने लगे। मैंने जोर से कहा, "ओए मोटी, समोसा खिलाएगी?" उसने कहा, "सिर्फ 10 रुपये हैं।" मैंने हँसते हुए कहा, "तु राजी तो हो पहले। एक-एक समोसा खा लेंगे।" फिर हम चंदू की दुकान में गए जो स्कूल के पास ही

थी। हमने समोसा मांगा और खाने लगे। मैंने देखा कि श्रेया के हाथों में मेंहदी लगी थी। मैंने मजाक में कहा, "तुम्हारी शादी हो रही है क्या?"

उसने कहा, "क्यों?" मैंने मेंहदी की ओर इशारा किया। उसने कहा, "माँ आज उपवास कर रही थी तो अपने हाथों पर मेंहदी लगा रही थी, तो मैंने भी लगा ली।" अच्छा तो ये बात है, तभी एक कुत्ता जा रहा था। मैंने श्रेया से मजाक करते हुए कहा, "देख, तेरा भाई जा रहा है।" श्रेया हँसने लगी और बोली, "तेरा भाई है।" चलो अब घर चले, हम दोनों पतली गली से होते हुए जाने लगे। श्रेया अपने घर चली गई और मैं भी घर पहुँचने वाला था। रास्ते में इतने कुत्ते थे कि मैं गिरते-गिरते बचा।

रास्ते में चलते हुए मैंने देखा कि रधू चाचा भी वहाँ थे, जो हमेशा की तरह अपने पुराने रेडियो पर गाने सुन रहे थे। हमारी दोस्ती श्रेया के साथ बहुत गहरी और मज़बूत थी, लेकिन उसमें दरार उस दिन आई जब खुशबू मेरी जिंदगी में आई। खुशबू ने हमारे स्कूल में पहली बार दाखिला लिया था। जैसे ही मैंने उसे देखा, मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं किसी फिल्मी सीन में हूँ और बैकग्राउंड में रोमांटिक गाने बज रहे हैं:

"तुझे देखा तो ये जाना सनम,
प्यार होता है दीवाना सनम"

ऐसा लगा जैसे मैं एक नई दुनिया में चला गया हूँ। तभी श्रेया ने पीछे से मेरे कंधे पर हाथ मारा और बोली, "कहाँ खो गए?" मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "मुझे इश्क हो गया है।" श्रेया ने हंसते हुए पूछा, "किससे?" मैंने कहा, "जो नई-नई हमारी क्लास में आई है, उसीसे।"

उसकी मुस्कान अचानक गायब हो गई और उसके चेहरे पर मायूसी छा गई, जैसे मैंने उससे कुछ बहुत कीमती चीज छीन लिया हो। वह चुपचाप क्लास में चली गई और मुझसे बातें करना भी कम कर दिया। इससे मुझे काफी अकेलापन महसूस होने लगा।

क्लास में बच्चे शोर मचा रहे थे, एक-दूसरे को गालियाँ दे रहे थे, और मुझे नींद सी आने लगी। मैंने बेंच पर माथा रखा और सोने की कोशिश की। अचानक, मुझे नींद आ गई और एक भयानक सपना दिखने लगा। मैंने देखा कि एक 17 साल का लड़का बाइक एक्सीडेंट में मर गया है, और वहाँ पर काफी भीड़ इकट्ठी हो गई है। मैं और पंकज एकटक से उसे देख रहे हैं।

अचानक मेरी आँखें खुलीं और मैंने खुद को हॉस्पिटल में पाया। मैंने चारों ओर देखा और पूछा, "मुझे क्या हुआ था?" सबने कहा, "तू क्लास में बेहोश हो गया था, इसलिए हम तुझे यहाँ ले आए।" मेरी माँ रो रही थी। डॉक्टर ने मुझे दवा दी और फिर

मुझे घर भेज दिया गया।

अगले दिन जब मैं स्कूल पहुँचा, तो सब मुझे ही देख रहे थे। श्रेया दौड़ते हुए मेरे पास आई और पूछी, "कल तुम्हें क्या हो गया था?"

मैंने धीरे से जवाब दिया, "मुझे नहीं पता, मुझे क्लास में नींद आ गई थी और मैंने एक सपना देखा कि एक लड़के का बाइक एक्सीडेंट हो गया है। फिर जब मेरी आँखें खुलीं, तो मैं हॉस्पिटल में था। मुझे याद नहीं है कि आखिर मैं बेहोश कैसे हो गया।"

यह सुनकर श्रेया थोड़ी चिंतित हो गई और उसने मुझे धीरे से गले लगाया। उस दिन के बाद से श्रेया और मेरे बीच की दूरी धीरे-धीरे कम होने लगी और हम फिर से अच्छे दोस्त बन गए। मैंने श्रेया से कहा, "एक काम करोगी?" उसने जवाब दिया, "ज़रूर! क्या करना है?" फिर मैंने कहा, "मुझे खुशबू से प्यार हो गया है, उससे मेरी बात करवाओ ना।"

श्रेया पहले तो हिचकिचाई, लेकिन फिर मान गई। उसकी मदद से, एक सप्ताह बाद मैं खुशबू से बातें करने लगा। कुछ महीनों बाद, खुशबू और मैं फोन पर भी बातें करने लगे।

हर बार जब मैं श्रेया को खुशबू के बारे में बताता, तो वह उदास

हो जाती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि श्रेया मुझसे प्यार करती है। अफसोस की बात है कि हमारा प्यार ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाया। सात महीने बाद, खुशबू और मैं अलग हो गए क्योंकि मुझे पता चला कि खुशबू मेरे अलावा भी कई लड़कों से बातें करती थी।

जब मुझे कैंटीन में श्रेया मिली, तो मैं उसके गले लगकर खूब रोया और उसे सारी बातें बताईं। श्रेया ने मुझे समझाया, "जाने दो, एक जाएगी तो दूसरी आएगी।" उसने मेरे उस पल में काफी साथ दिया और मुझे संभालने की कोशिश की। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ महीनों बाद मुझे श्रेया से प्यार हो गया।

जब मैंने यह बात श्रेया से कही, तो उसने कहा, "जब मुझे तुमसे प्यार था, तब तुम किसी और (खुशबू) से प्यार करते थे। और जब मैंने अपने दिल को मना लिया कि साहिल मुझसे प्यार नहीं करता, तो अब तुम कह रहे हो कि तुम मुझसे प्यार करते हो। अब मैं तुमसे प्यार नहीं करती।"

मैंने पूछा, "क्या तुम किसी और से प्यार करती हो?"

श्रेया ने जवाब दिया, "मैं तुम्हारे अलावा किसी और से प्यार करने की सोच भी नहीं सकती।"

मैंने अपने मन में ही सोचा, "यह लड़की बड़ी नासमझ है।

कहती है कि मुझे तुम्हारे अलावा किसी से प्यार ही नहीं होगा।

हर इंसान चाहे वो लड़का हो या लड़की, उसे किसी न किसी से दुबारा-तिबारा या फिर बहुत बार किसी पर दिल आ ही जाता है। अगर वो अपने मन को नियंत्रित कर ले तो अच्छी बात है, वरना कोई चाहे तो उसका दिल हजारों पर भी आ सकता है।" इस तरह, श्रेया की सच्चाई और उसकी भावनाओं ने मुझे एक नया दृष्टिकोण दिया। मैंने खुद से वादा किया कि मैं उसकी भावनाओं की कद्र करूंगा और अपने दिल को सच्चे प्यार के लिए खोलूंगा।

श्रेया मुझसे हर बात बताती थी। कुछ दिनों बाद, उसने एक नए लड़के के बारे में बोलना शुरू किया। उसकी बातों से मुझे लगा कि वह उस लड़के को पसंद करने लगी है। उस दिन के बाद से हर दिन, वह उसी लड़के की बातें करती रहती थी। मुझे उस लड़के के प्रति जलन महसूस होने लगी। एक दिन श्रेया ने साफ-साफ कह दिया, "मैं उस लड़के को पसंद करने लगी हूँ।" उस लड़के का नाम नितिश था, और उस दिन मुझे एहसास हुआ कि जब मैं खुशबू की बातें श्रेया को बताता था, तो श्रेया को कैसे महसूस होता होगा।

जैसा कभी श्रेया जलन महसूस करती थी, आज उसी तरह की जलन मैं महसूस कर रहा था। स्कूल के बाद जब घर आया, तो बस श्रेया की बातें ही दिमाग में चल रही थीं। खाना खाने का भी

मन नहीं कर रहा था, और दोपहर में खाना नहीं खाया। रात को भी भूखे पेट सो गया क्योंकि मुझे डर था कि कहीं श्रेया मुझसे दूर न चली जाए।

अचानक से मैंने फिर से वही सपना देखा, लेकिन इस बार थोड़ा अलग था। एक्सीडेंट जहां हुआ था, वहीं भीड़ से थोड़ी दूर श्रेया भी अपनी साइकिल पर बैठी थी। उसके आँखों से जैसे आँसू निकलने वाले थे, पर वह अपने आँसुओं को छिपा रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे श्रेया उस लड़के को जानती है जिसका एक्सीडेंट हुआ था।

"माँ, माँ, इसने आँखे खोल दीं!" मेरे भाई ने जोर से कहा। माँ दौड़ती हुई आई, और वह काफी सहमी हुई थी। मैंने पूछा, "आपको क्या हुआ है, आप इतनी डरी हुई क्यों हैं?" माँ ने कहा, "तु सपने में जोर-जोर से चिल्ला रहा था और बोल रहा था कि 'वो मर गया, वो मर गया।'"

कौन मर गया, बेटा?"

मैं कुछ नहीं कह पाया और माँ के गले लग गया। फिर से सोने की कोशिश करने लगा, पर मेरी नींद जैसे उड़ ही गई थी। मैंने मोबाइल में Time देखा, रात के 2 बजे रहे थे। रात काफी हो चुकी थी, इसीलिए मुझे कैसे भी सोना पड़ा। जब सुबह हुई, तो आईने में अपना चेहरा देखा। मेरी आँखे लाल हो चुकी थीं

क्योंकि मैंने सोने की कोशिश तो की थी, पर सो नहीं पाया था। कई बार कुछ चीजें बिल्कुल आपके सामने रहती हैं, पर वो आपको दिखाई नहीं देतीं। लेकिन जब वही चीजें हमसे दूर हो जाती हैं, तो हमें उनकी कमी महसूस होती है। श्रेया भी ऐसी ही थी। जब वह थी, तो मुझे उसकी कद्र नहीं थी। लेकिन आज जब वह मुझसे दूर जा चुकी है, तो मुझे उसकी कमी महसूस हो रही है।

मैंने अपना फोन खोला और सबकी Instagram Story लाइक करना शुरू कर दिया। उसी बीच श्रेया की भी स्टोरी थी। उसने काफी "Sad Story" लगाई थी और स्कूल के टाइम क्लास में भी काफी उदास दिख रही थी। उसको उदास देखकर मैं भी काफी मायूस हो गया।

लंच के समय जब मैंने उससे इस बारे में पूछा तो उसने बताया कि नितिश से उसका झगड़ा हो गया है। मैंने नीतीश से बात की कि वह झगड़ा न करे, लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी। अब हर हफ्ते उन दोनों में झगड़े होने लगे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि वे दोनों एक-दूसरे से अलग हो गए। श्रेया का भी मेरी तरह ही ज्यादा दिनों तक रिश्ता नहीं चल पाया और उसका 4-5 महीने में ही ब्रेकअप हो गया। श्रेया बहुत रो रही थी। मैंने नितिश से कितना रिव्वेस्ट किया कि सब भूल जाओ और श्रेया

की जिंदगी में फिर से चले आओ, पर उसने साफ मना कर दिया।

मैं भले ही श्रेया को चाहता था, पर श्रेया के आँशुओं ने मुझे नितिश से रिक्वेस्ट करने तक मजबूर कर दिया था। जब आप किसी से सच्चा प्यार करते हैं तो आपको कभी भी यह चाहत नहीं होती कि वह मुझे किसी भी हालत में मिलनी चाहिए। बल्कि आप यह सोचते हैं कि मैं जिससे प्यार करता हूँ वह हमेशा खुश रहे।

अब मैं नवीं कक्षा में आ गया था, इस कारण मैंने दूसरे स्कूल में नाम लिखवा लिया। श्रेया ने भी अपनी मां से काफी जिद की और उसने भी मेरे नए स्कूल में ही नाम लिखवा लिया। अब हम दोनों फिर से एक साथ हो गए। जब भी वह उदास रहती तो मैं उसके पास रहता था। दरअसल, हमारा जो नया स्कूल था वह एक हॉस्टल था। इसलिए श्रेया को 1-2 महीने पर ही अपने माता-पिता से मिलने का मौका मिलता था। वह जब भी अपने माता-पिता से मिलती तो काफी खुश हो जाती थी, लेकिन उसे हॉस्टल में अपनी मां की याद आ जाती थी। इसलिए वह हॉस्टल में काफी उदास रहा करती थी। जो लड़की कभी रात के 8 बजे ही सो जाती थी, अब वह मेरे साथ रात के 10-11 बजे तक पढ़ाई करने लगी।

वह जब भी Labs में अपना Project अच्छे से नहीं बनाती या हॉस्टल के नियमों में थोड़ी सी भूल कर देती तो हॉस्टल के स्टाफ और शिक्षक उससे काफी सख्ती से पेश आते। इस कारण वह और भी उदास हो जाती थी और कभी-कभी तो रोने भी लगती थी। मैं जब भी उसे इस हालत में देखता तो उदास हो जाता था। जो लड़की कभी एक पल अपने माँ-बाप से दूर न रह पाती थी, आज वही लड़की रोती तो है पर हिम्मत से उसका सामना करने के लिए खड़ी भी हो जाती है। हॉस्टल के बाकी छात्र जब भी आते तो श्रेया की मंद बुद्धि का मजाक उड़ाने लगते। कभी-कभी मैं भी शामिल हो जाता, पर मेरे मजाक उड़ाने का यह मतलब नहीं था कि उसे तंग करूँ, बल्कि मैं उसे हँसाना चाहता था, और वह हँसती भी थी। लेकिन मुझे बाद में लगा कि शायद भले ही वह खुलकर न बोले, लेकिन अंदर ही अंदर चिढ़ती होगी। इसलिए मैंने मजाक उड़ाना ही छोड़ दिया। मैं चाहता था कि उसे इतनी खुशी दूँ कि उसे अपने माँ-बाप की याद ना आए। और मैं सफल भी था, पर कभी-कभी वह अपने माता-पिता को याद करके रोने लगती और मैं कुछ नहीं कर पाता।

ऐसे ही दिन बीतते गए और 4-5 महीने बाद मैंने श्रेया को फिर से प्रपोज किया। वह पहले तो हिचकिचाई, पर फिर

आखिरकार मान गई। कई लोगों का कहना है कि प्यार एक बार ही होता है, लेकिन मेरा मानना है कि प्यार दोबारा भी हो सकता है। जब प्यार पहले एक बार होता था, तब लोग सच्चे होते थे और बेवफाईयां कम होती थीं। लेकिन आज के समय में हर इंसान बेवफा है, इसलिए अब प्यार दोबारा भी हो सकता है। मैं हर पल सोचता था कि अगर श्रेया हॉस्टल की पढ़ाई खत्म होने के बाद हॉस्टल छोड़ देगी तो मैं अकेला क्या करूंगा। इसलिए जितना ज्यादा हो सकता था, मैं श्रेया के चुपके-चुपके फोटो खींचने लगा और उसके फोन में उसके जितने भी सारे फोटो थे, सबको अपने फोन में Send करना लगा। ताकि अगर वह मुझे छोड़ के भी चली जाए, तब भी उसकी तस्वीरें मेरे साथ रहेंगी।

मुझे आज भी याद है, जब एक बार मैंने उससे पूछा था कि तुम्हें BF का Full Form पता है, तो उसने कहा था 'Best Friend'

और जब GF का पूछा तो उसने 'Good Friend' बताया था। मुझे यह सुनकर काफी हंसी आई थी।

मुझे उसके साथ बिताया हर पल काफी अच्छा लग रहा था, हर एक पल खुशियों से भरा था।

"क्या कर रही हो?" मैंने पूछा।

"Maths में बहुत दिक्कत हो रही है, तुम बना दोगे?" उसने नन्ही मुस्कान के साथ कहा।

"क्या, मैं क्यों बनाऊँ? मुझे क्या मिलेगा?" मैंने चिढ़ाते हुए पूछा।

"जो भी चाहो।" उसने जवाब दिया।

"किस दोगी?" मैंने सीधे पूछा।

"अच्छा, सोचती हूँ। पहले बनाओ तो।"

मैंने उसके मैथ्स के सारे question solve कर दिए और फिर पूछा, "Kiss?"

"अरे, पागल हो गए हो क्या? कोई स्टाफ आ गया तो?" उसने घबराते हुए कहा।

और मैं चुप हो गया। तभी अचानक बिजली चली गई और पूरे हॉस्टल में अंधेरा ही अंधेरा हो गया। यह अचानक आए अंधेरे ने माहौल को रोमांटिक बना दिया था। मैंने धीरे-धीरे उसके हाथ को अपने हाथ में लिया और उसे टेबल से उठाया। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी, लेकिन दिल की धड़कनें तेज हो गई थीं। मैं उसके करीब गया और हमने काफी देर तक किस किया। किस के बाद हम दोनों शांत हो गए, श्रेया कमरे से बाहर चली

गई, और टैरेस में टहलने लगी। उस दिन श्रेया ने मुझसे बात नहीं की, लेकिन दूसरे दिन फिर से पहले की तरह हम दोनों एक साथ पढ़ने लगे। फिर से पहले जैसा माहौल हो गया। लेकिन अब पढ़ाई के साथ-साथ हमारे बीच की बातें भी बढ़ गई थीं।

उस दिन के बाद मुझे पहली बार अहसास हुआ कि पहला प्यार हमें प्यार करना सिखाता है और दूसरा प्यार हमें जिंदगी का आइना दिखाता है। पहला प्यार हमें हमारी गलतियों के बारे में बताता है और दूसरा प्यार हमें गलतियों से बचने के बारे में सिखाता है। प्यार सिर्फ प्यार नहीं होता, यह वह अहसास है जो हमें जिंदगी, छल-कपट, धोखा, विश्वास, दोस्ती, हर चीज के बारे में सिखाकर जाती है।

कहा जाता है कि जब आप ज्यादा खुश होने लगते हैं, तो भगवान एक नई मुसीबत भेज देता है। शायद भगवान को मेरी खुशी बर्दाश्त नहीं हुई।

"हाँ पापा," श्रेया ने फोन पर कहा।

"क्या सच में? ठीक है, ठीक है।"

फिर श्रेया ने मुझे बुलाया और बताया, "अब मैं घर जा रही हूँ, हमेशा-हमेशा के लिए क्योंकि पापा ने अभी फोन करके कहा है कि तुम तैयार हो जाओ।"

मैंने कहा, "लेकिन श्रेया, अभी तो हॉस्टल की पढ़ाई खत्म होने में लगभग एक साल बाकी है। तुम इतनी जल्दी क्यों जा रही हो?"

उसने बताया, "पापा कह रहे थे कि अब तुम घर पर ही online class और गुप्ता जी के कोचिंग में पढ़ाई कर लेना।"

मुझे ये सुनकर बहुत बड़ा धक्का लगा। आज श्रेया बहुत खुश थी, ऐसा लग रहा था कि वर्षों से बंद पिंजरे कि एक बुलबुल को खुले आकाश में उड़ने की स्वतंत्रता दे दी गई हो। कुछ देर बाद उसके पापा भी आ गए। उनकी मोटरसाइकल काले रंग की थी और हेडलाइट नीले रंग की थी, जो काफी दूर से ही चमकदार लग रही थी।

मैंने श्रेया के पापा से अपने प्यार के बारे में बताने का सोचा, पर हिम्मत नहीं जुटा पाया। श्रेया से भी कहना चाह रहा था कि क्या तुम कुछ दिन और नहीं रुक सकतीं, पर कुछ कह नहीं पाया। आखिरकार वह जाने लगी जब वह जा रही थी तो मैं टैरेस पर

दौड़ते हुए गया और मैंने आखिरी बार उसे देखा, उसकी फोटो को अपने फोन में देखने लगा और जोर-जोर से रोने लगा। कभी उसकी photo देखता, तो कभी उसके किताबों के पन्ने पलटता जिसे वह ले जाना भूल गई थी। कभी उसका नाम लेकर जोर से चिल्लाता, तो कभी आइने में उसका चेहरा अपने आप दिखने लगता। कभी सामानों की तोड़-फोड़ करता, तो कभी खाना खाने से दुश्मनी। मेरी हालत पागलों से भी बदतर हो चुकी थी और उस समय मेरे साथ कोई नहीं था। मैं अकेले रोता रहा, बस होता रहा।

मैंने उसे मैसेज किया, वह घर पहुँच गई थी। मैं थोड़ी देर ही बात कर पाया क्योंकि श्रेया ने कहा कि "बाद में बात करती हूँ, पापा बगल में ही हैं।"

मैंने फोन बंद किया और सो गया, क्योंकि रोने के बाद नींद बहुत अच्छी आती है। सुबह जब उठा तो शरीर भारी-भारी सा लग रहा था, शायद उसकी यादें कुछ ज्यादा ही वजनदार थीं। कुछ महीनों तक उससे कॉल या मैसेज के जरिए बातें होती रहीं, लेकिन एक समय ऐसा भी आया जब धरती और आसमान की तरह हमारे बीच की दूरियाँ बढ़ने लगीं और अचानक खत्म भी हो गईं। हमारा जो प्यार बिछड़ने के बाद भी जिंदा था, अब पूरी तरह मर गया था। और अब हर एक पल में

बदलाव होने लगा था।

मैं काफी चिड़चिड़ा रहने लगा, काफी अकेला रहने लगा। मुझे DarkWeb पर Disturbing Videos देखने की आदत लग गई (जिस video में एक जिंदा आदमी को मारा जाता है) छत से नीचे की तरफ देखता तो कूद जाने का मन करता। किसी बच्चे को देखता तो जाने से मार देने का जी करने लगता। मेरी आदतें अचानक से काफी बदल गई थीं। मुझे अहसास हुआ कि ये सारे लक्षण पागल होने का प्रतीक हैं।

मैं सच में पागल हो गया था, लेकिन फिर भी मेरे साथ कोई नहीं था। हर दिन, हर रात पागलपन और उसकी यादों के साथ बिताई है मैंने। जहाँ मेरे साथ कोई नहीं था।

मुझे मेरे अंधेरे से उजाले में लाने वाला कोई नहीं था। सोचा था कि मैं माँ को बताऊंगा तो वह शायद मेरी बातें समझ लेंगी। पर जब मैंने माँ को बताया तो माँ ने मेरी एक ना सुनी और बोली, "पढ़ाई-लिखाई करो और उस लड़की को भूल जाओ।"

कहा जाता है कि माँ अपने बेटे के लिए कुछ भी कर सकती है, पर मेरी माँ हार गई। इस दुनिया के सामने, अपनी वर्षों से कमाई हुई इज्जत के सामने।

"मेरी माँ हार गई, मेरी माँ हार गई"

मुझे सबसे शिकायते थीं, कुछ खुद से, कुछ माँ से, कुछ श्रेया से और कुछ इस दुनिया से जो प्यार को कभी समझ नहीं पाएगी।

लेकिन फिर सब कुछ बदल गया और एकदम से बदल गया। वो रात सबसे अलग थी, मुझे उस रात गहरी नींद आई। और मैंने एक सपना देखा कि

-

-

-

-

-

-

मुझे पंकज ने फोन किया है और उसने बताया कि किसी का एक्सीडेंट हो गया है। मैं जल्दी-जल्दी उठा और हम दोनों चौक पर जाने लगे। मैंने देखा कि एक 17 साल का लड़का जो अपने कंधे पर बैग लिए हुए है, उसका एक्सीडेंट हो गया है और उसकी मौत हो चुकी है। उसकी कनपटी से बहुत खून बह रहा था, और पास में थोड़ी ही दूर श्रेया अपनी साइकिल पर बैठी हुई थी और अपने बहते आँसुओं को छुपा रही थी। तभी अचानक मेरी तंद्रा टूटी और मैं अवाक रह गया। वो लड़का कोई और

नहीं बल्कि मैं ही था। मैंने पंकज को आवाज लगाई, "ये तो मैं हूँ," पर पंकज मेरी आवाज नहीं सुन पा रहा था। पंकज मेरे ही बगल में था लेकिन वो मुझे देख नहीं पा रहा था। मैंने श्रेया को भी आवाज लगाई पर श्रेया भी मुझे देख नहीं पा रही थी और ना ही सुन पा रही थी।

काफी डर गया कि ये क्या हो रहा है। तभी मेरे पास यमराज आ गए और उन्होंने मुझे आवाज दी। मैं और भी डर गया कि मेरे साथ क्या हो रहा है। मैंने पूछा, "मैं किसी को क्यों नहीं दिखाई और सुनाई दे रहा हूँ?" यमराज ने कहा, "क्योंकि तुम सपने में हो, और सपने को कोई व्यक्ति खुद से Control नहीं कर सकता। बल्कि हमारी मस्तिष्क सपने को पैदा करती है।"

मैंने पूछा, "तो ये एक्सीडेंट किसका हुआ है?" यमराज ने कहा, "ये जो मरा हुआ इंसान है वो साहिल है, और इसने कोई एक्सीडेंट नहीं किया है बल्कि सुसाइड किया है। इसने जानबूझकर एक्सीडेंट किया ताकि वो मर जाए, क्योंकि श्रेया इसे छोड़कर चली गई जिसके गम में इसने जान गंवा दी। ये मरा हुआ इंसान तुम ही हो।"

मैं और भी डर गया कि ये क्या हो रहा है। मैंने पूछा, "अगर ये मरा हुआ इंसान मैं हूँ तो मैं जिंदा कैसे हूँ?" यमराज ने कहा, "ये भी तुम ही हो और मरा हुआ भी तुम ही हो।"

बस फर्क इतना है कि जो सोया हुआ है वो मनुष्य है और सोने के बाद तुम जिसके मस्तिष्क में घूम रहे हो वो तुम हो। तुम उसकी यादें हो। असल में तुम साहिल की सपनों का एक हिस्सा हो।"

(यानी ये सब जो भी हो रहा था ये सब साहिल अपने सपने में देख रहा था)

मैंने यमराज से पूछा, "तो फिर मुझे यहाँ क्यों लाया गया है?"

यमराज ने बताया, "साहिल ने श्रेया के प्रति अपने मस्तिष्क में काफी ज्यादा दर्द संभाले हुए है, जिस कारण इसके मस्तिष्क को काफी बोझ का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए इसके दर्द को कम करने के लिए इस सपने की रचना की गई है जिसमें तुम भी शामिल हो ताकि ये सपने के कारण साहिल को अंदर से मजबूती दे पाए और दर्द को भूलने का जरिया बने।"

((((जब भी हमारा मस्तिष्क तनाव महसूस करता है, किसी दोस्त/प्रेमी से मिले हुए काफी दिन हो जाते हैं, तो हमारा मस्तिष्क खुद से ही ऐसे सपनों को जन्म देता है जिससे हमें तनावों से लड़ने की शक्ति मिलती है।

आपने ध्यान दिया होगा कि कई बार ऐसे लोग आपके सपने में जरूर आते हैं जिनसे मिले हुए आपको काफी समय हो जाता है, क्योंकि मस्तिष्क को उसकी कमी महसूस होती है और वो

आपके सपने में दिखाई देता है)))

ये सारी बातें बताकर यमराज उस मरे हुए साहिल (जिसका एक्सीडेंट हुआ था) के पास जाते हैं और उसे अपने साथ ले जाने लगते हैं। ये सारे दृश्य देखकर मैं काफी डर जाता हूँ, रोने लगता हूँ और दौड़कर भागने लगता हूँ। पर अफसोस ये सब सपना होता है और आप सपने में दौड़ नहीं सकते। सपने में दौड़ने की कोशिश के कारण मेरे हाथ-पैर चलने लगते हैं, जिससे एक गिलास गिर पड़ता है और मेरी नींद खुल जाती है। मुझे पता चलता है कि ये सब तो बस एक सपना था।

भले ही वो एक सपना था पर उस सपने ने मेरी जिंदगी बदल दी। आज मैं पागलपन और अपने प्यार के दर्दों से काफी दूर हूँ, क्योंकि उस दिन के बाद पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं आत्महत्या के बारे में कभी नहीं सोचूंगा। आज मैं नए-नए लोगों से बातें करने लगा हूँ और इसका परिणाम ये हुआ कि मैं पागलपन से बाहर निकल आया।

आज मेरी जिंदगी काफी अच्छी है और मैं अब फिर से एक नए Relationship में हूँ।

"कई लोगों का कहना है कि प्यार जिंदगी में एक बार होता है, हजार बार नहीं। अगर ऐसा है तो मुझे ऐसी सलाह नहीं चाहिए।"

क्योंकि सबसे ज्यादा अगर कोई प्रेमी/प्रेमिका आत्महत्या करता है या पागलपन की ओर प्रवेश करता है तो निश्चित रूप से उसका मानना होता है कि प्यार एक बार होता है। लेकिन अगर वही व्यक्ति सोचे, "एक जाएगी तो दूसरी आएगी," तो कोई आत्महत्या नहीं करेगा। अगर मैं इस विचारधारा को मानने पर गलत कहा जाता हूँ तो ठीक है, मैं यही हूँ।

क्योंकि आत्महत्या करने या पागल बन जाने से अच्छा है किसी और से प्यार कर लेना।